Global Journal of Multidisciplinary Studies Available online at www.gjms.co.in
Volume 3, Issue3, Feb 2014
ISSN: - 2348-0459

''मण्डला जिले के गौंड राजाओं का ऐतिहासिक परिचय''

डॉ. (श्रीमति) लक्ष्मी भाण्डे
अतिथि विद्वान (इतिहास) शास. महाविद्यालय बरेला (जबलपुर)

सारांश

इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव हजारों और लाखों वर्षों की विकास की प्रक्रिया से गुजरता हुआ वर्तमान अवस्था तक पहुंचा है। मानव प्रारम्भिक अवस्था में जंगलों और पहाड़ों में निवास करता था, फल–फूल और शिकार की सहायता से अपने जीवन का निर्वाह करता था। आखेट और पशुपालन व्यवस्था के बाद भी मानव का भटकना समाप्त नहीं हुआ। जैसे ही मानव समाज ने कृषि की आविष्कार किया वह एक स्थान पर स्थायी तौर पर निवास करने लगा। विचारणीय यह है कि सभी मनुष्यों की उत्पत्ति एक साथ हुयी, फिर भी उनमें से कुछ को आदिम जातियों तथा शेष को सभ्य जातियों की संज्ञा कैसे दी गयी?

खोज शब्द – अवस्था, समाज, विकास

प्रस्तावना एवं मण्डला जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः–

इस पर विचार करने के बाद सर्वप्रथम जिस तथ्य पर ध्यान क्रेन्द्रित होता है, वह यह है कि कुछ जातियां स्वयं में समयानुसार परिवर्तन नहीं कर सकी और शेष जातियां परिस्थितियों एवं बदलते परिवेश एवं परिस्थितियों से सामान्जस्य स्थापित नहीं कर पायी तथा स्वयं को उनके अनुकूल ढाल नहीं सकी और पुरातन सामाजिक स्तर तथा संस्कृति पहचान को अपने मूल रूप में बचाए हुए हैं, उन्हें हम आदिम जाति या जनजाति कहने लगे है। यहां हम कह सकते है कि सम्पूर्ण मानव समाज का विकास एक साथ नहीं हुआ है। कुछ समाज विकास की परम्परा में बढ़ गये तो दूसरे समाज काफी पीछे रह गये अनेक मानव समाज आज भी आखेट अवस्था में निवास कर रहे है, धीरे–धीरे इनकी संख्या में निरंतर वृद्धि होती गई जैसे ही जैसे सभ्यता का विकास होता गया समाज की आर्थिक, राजनैतिक सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं का विकास होता गया जब ये झुण्ड अधिक विकसित हो गये तो वन्य जाति के नाम से सम्बोधित किये जाने लगे।

निरंतर प्रगति की ओर उन्मुख मनुष्य ने धरती से अम्बर तक अपने अस्तित्व को स्थापित करते हुये सामाजिक संरचना में विराट परिवर्तन किये है। मनुष्य की प्रगति उसकी बुद्धि का प्रतीक है इसलिए सभी प्राणियों में उसे सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

प्रत्येक समाज चाहे वह आदिम हो या उन्नत स्त्रियों की स्थिति उस समाज में प्रचलित आदर्शों, विश्वासों मान्यताओं व मूल्यों के आधार पर तथा उन्हें सौंपे गये कार्यो के

अनुसार निश्चित होती है, ये आदर्श मूल्य व कार्य प्रत्येक समाज में भिन्न प्रकृति के होते है इसलिए विभिन्न समाजों में स्त्रियों के संस्तरण की दिशा निम्न समाजों से उन्नत समाजों की आरे इसके विपरीत है यह धारणा बनाना गलत है।

स्त्री और पुरुष समाज निर्माण के दो परस्पर पूरक तत्व है, किन्तु आज तक की स्थिति का आंकलन करने से ज्ञात होता है कि स्त्री–पुरूष दो तत्व होते हुए भी अत्याधिक असामान्यता रखते हैं। पुरूष सामाज का प्रधान अंग माना जाता है, जबकि स्त्री को पूरक तत्व मानकर उसके अस्तित्व को स्वीकारा गया है, यही कारण है कि नदियों के उतार–चढ़ाव के बाद भी भारतीय स्त्रियां अपनी स्थायी पहचान बनाने के लिये आज भी संघर्षरत् है, प्रायः सोचा जाता है कि उन्नत समाज में स्त्रियों की स्थिति उन्नत होती है और निम्न समाज में निम्नतर इसी धारणा के आधार पर अनुमान लगा लिया जाता है कि आदिम जाति के लोग चूंकि जंगली या अर्धसभ्य होते है अतः उन समाजों में स्त्रियों की स्थिति दयनीय होगी।

मण्डला का ऐतिहासिक परिचयः–

मंडला जिले का इतिहास निःसंदेह अति प्राचीन है। भूगर्भ शास्त्र के सर्वमान्य विद्वान एटुवर्ड सुएस के अनुसार गोड़वाना के मण्डला जिले का अस्तित्व आज से 35 करोड़ वर्ष पहले भी था, यह क्षेत्र दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया से भूमि में संलग्न था। जहां आज हिन्द महासागर लहरा रहा है वहां भूमि भी थी।

हरिहरण पुराण के अनुसार – ''हेहयवंशी राजा मुचकुँद ने विंध्याचल की एक भयावह किंतु सुंदर घाटी में एक स्थान की सफाई कर वहां एक नगर बसाया।'' इसी नगर को वर्तमान में हम मण्डला नाम से जानते हैं। इसे पुराणकाल में महिष्मती के नाम से जाना जाता था। नर्मदा नदी यहां की जीवन रेखा है। आज तक किसी विदेशी आक्रमणकारी जाति ने विंध्याचल को पार नहीं किया। यह सम्पूर्ण जिला आदिवासी हैं एवं आज भी यहां अनेक ऐसे स्थान है जो मनुष्य की पहुंच से बहुत दूर है।[1]

प्रारम्भिक इतिहासः–

गेटे के अनुसार ''इतिहासवाद का कर्तव्य है कि वह सत्य को असत्य से अलग रखें, यथार्थ को कल्पना से मुक्त रखे एवं अनिश्चितता को कभी स्वीकार न करें ''परन्तु यह कार्य सम्भावना की परिधि से परे है, उदाहरणार्थ मण्डला जिले के ऐतिहासिक तथ्य अतिश्योक्ति से भरे पड़े है, क्योंकि दरबारियों द्वारा राजाओं को प्रसन्न करने के उद्देश्य से लेखबद्ध किए गए होंगे। कुछ शिलालेखों के कारण भी भ्रम की स्थिति का सामना करना पड़ता है। जब मण्डला अपनी प्रगति एवं महत्व के चर्मोत्कर्ष पर था, उस समय उसे ''गढ़ा मण्डला'' के नाम से जाना जाता था। राजा की प्रशंसा पाने के लिए चरणों ने गढ़ा–मण्डला के शासकों की उत्पत्ति पौराणिक काल से खोज निकली एवं इसकी (मण्डला) नाम की उत्पत्ति का स्त्रोत 'महिष्मंडल' अथवा महिष्मती माने जाने लगा, जो कि प्रारंभिक संस्कृत साहित्य में कार्त्तवीर्य (सहस्त्रषात्) की राजधानी थी। इसी प्रकार मण्डला के शासकों

का उद्भव प्रमाणित करने का प्रयास किया गया। परन्तु डॉ. फ्लिट के अनुसार यह राज्य उद्भव मात्र कहानी बनकर रह गया।

संस्कृत साहित्य ''कह महिषावती'' डॉ. फ्लिट के अनुसार यह निवास जिले में स्थित है, वही वास्तविक से 'महिष्मती' है। फ्लिट के अनुसार सामंतवादी ''मंडला'' शब्द की उत्पत्ति हुई होगी।[2]

अज्ञानता और अनिश्चितता की परिधि के अन्तर्गत मण्डला का इतिहास तीन कालखण्डों में विभाजित किया जा सकता है, क्योंकि यह क्षेत्र उत्तर एवं दक्षिण में पहाड़ियों द्वारा घिरा होने के कारण अन्य क्षेत्रों से अलग–थलग पड़ गया था। इसी कारण यहां पर उत्तर तथा दक्षिण की संस्कृति का विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। 6वीं शताब्दी से 12 वीं शताब्द ईस्वी तक का इतिहास वास्तविकता से परिपूर्ण है।

प्राचीन काल में मेसोडोनियन आक्रमण का भी इस जंगली एवं पहाड़ी क्षेत्र पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इस क्षेत्र के पहाड़ियों, घाटियों तथा भयानक जंगलों से भरे होने के कारण मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त एवं अशोक महान् भी इस क्षेत्र पर ध्यान देने में असमर्थ रहें, परन्तु तत्कालीन समय ऐसा समय रहा जब उत्तर एवं दक्षिण में अनेक राज्यों का समावेश का उदय एवं पतन हुआ। मौर्य, शुंग एवं कण्य राजवंशों ने शासन किया एवं पतन हुआ। दक्षिण में गोदावरी एवं कृष्णा नदी के तट पर आन्ध्र नरेशों ने अपना राज्य विस्तार किया जो कि मध्य भारत तक विस्तृत था। तीसरी शताब्दी में आन्ध्र साम्राज्य के पतन के साथ राजपूत जाति का प्रादुर्भाव हुआ।[3] डॉ. बीसेंट स्मिथ के अनुसार – ये जंगीले कबीले अपने स्थानीय शासकों के मातहत ही मजे से रहे।

मण्डला का राजगौड़ वंश दावा करता है कि उनका राजा जादोराय संवत 415 या सन् 358 ई. में गद्दी पर बैठा। आंध्रों का जिन देश गोदावरी से अलग था। मण्डला के गौंड़ वंश का कथन है कि जादोराय गोदावरी से 20 मील पर सहलगांव का पटेल था, अन्य कथनों से भी सिद्ध होता है कि चाहे जब आया हो, किन्तु गोदावरी की ओर से आया था। अतः जान पड़ता है कि कदाचित आन्ध्र आधिपत्य के समय यहां के गोंड़ों की कुछ कदर की गई हो और उनके मुखिया को शासन के कुछ अधिकार प्रदान किए गए हो। परन्तु आन्ध्रों का स्वामित्व अधिक दिनों तक नहीं रहा। चतुर्थ शताब्दी में गुप्त वंश के उदय होते ही उसका इतना प्रभाव बढ़ा कि मौर्यो की गति अनुसार प्रायः समस्त भारत उनके हाथों में आ गया, इसलिए मण्डला में भी अन्यंत्र की तरह परिवर्तन हुआ होगा। समुद्रगुप्त ने मध्यप्रदेश के 18 आण्विक अर्थात् जंगली राज्यों पर अपना अधिकार कर लिया था। मण्डला की गणना आण्विक राज्यों में आवश्यक रही होगी। गुप्तों के पश्चात् कल्चुरी वंश का पता चलता है, जिसकी राजधानी त्रिपुरी वर्तमान जबलपुर जिले के तेवर में थी।

कल्चुरी हैहयवंशी राजाओं की शाखा है इस वंश का आदि पुरूष सहस्त्रार्जुन कातिवीर्य था। जो कल्चुरी में राम, परशुराम के समकालीन था। स्थानीय लोगों का कथन है कि मण्डला नगर ही प्राचीन महिष्मती कहलाता था। विदित है कि परशुराम ने कातिवीर्य से बैर ठानकर क्षत्रियों पर 21 बार आक्रमण किया

परन्तु हैहय इसके मिटाये न मिटे। परशुराम के वृद्धावस्था के समय में हैहय बहुत प्रबल हो गए थे, और उनके वंशज चारों तरफ फैल गए थे। उनमें से एक ने महिष्मती के शाल का दूसरा स्थान नर्मदा नदी के तट पर त्रिपुरी नगर बताकर ढूंढ़ निकाला, यह जबलपुर जिले में प्रख्यात भेड़ाघाट के पास वर्तमान में तेवर नाम से जानी जाती है। यह कल्चुरियों की राजधानी बनीं कल्चुरियों ने अपना संवत 248 ई. में स्थापित किया था, किन्तु ठीक से अभी यह पता नहीं चल पाया है कि वे त्रिपुरी में किस समय आए थे।

ऐसा प्रतीत होता है कि उस जमाने में तालुक या तहसील को मण्डल कहते थे, और मण्डल के अधिकारी माण्डलिक कहलाते थे, और वे मूल गद्दी के अधिकारी के अधीन रहते थे। त्रिपुरी के निकट का मण्डल जो वर्तमान मण्डला जिले में पड़ता था। एक भाई को मिला जिसे नर्मदा और बंजर के संगम पर अपने मण्डल ही के नाम से एक नगर बसाया जो अब मण्डला कहलाता है। कल्चुरी वंश में युवराज देव प्रथम प्रतापी राजा हुआ, कल्चुरी वंश का नींव जमाने का श्रेय गांगेयदेव को दिया जाता है। उसने समस्त उत्तरीय भारत बंगाल, उड़ीसा, दक्षिण हैदराबाद के निकटस्थ कुंतल इत्यादि के राजाओं को परास्त किया। गांगेय का पुत्र कर्णदेव भी अपने पिता से भी अधिक प्रतापी शासक बना।

कल्चुरी वंश के राज्य का पतन कर्ण के पश्चात प्रारम्भ हो गया, यद्यपि उसका पुत्र यश कर्ण पराक्रम हीन नहीं था, किन्तु यह पराजित राजाओं के विद्राहों को दबा पाने में असमर्थ सिद्ध हुआ, उसके बाद के समय में चंदेलों ने बहुत उत्पात मचाया हांलाकि कल्चुरी के पूर्ण पतन में कर्ण पश्चात, सात–आठ सौ वर्षों का लंबा समय लगा।[4]

गोंड़राजः– कल्चुरियों के शासन समाप्त हो जाने के पश्चात् स्थानीय सरदारों को गड़बड़ मचाने का मौका मिल गया था। चंदेलों ने मण्डला के जंगलों में बहुलता वाले जिले में अपनी सत्ता स्थापित करने का प्रयत्न नहीं किया। अतएव गोंड़ लोग यहां अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए प्रयास करने लगे। तेरहवीं, चौदहवीं सदी में इन्होंने क्या उन्नति की इसकी ठीक–ठाक जानकारीं नहीं मिलती। 15 वीं सदी में जानकारी मिलती है कि जो गोंड़ लोग कल्चुरियों के पश्चात् छोटे–छोटे गिरोह बनाकर लूटमार करते थे, उन्होंने अपना एक बड़ा गिरोह बना लिया था और अन्य छुटपुट जो गिरोह थे वे इनके आधिपत्य में आ गए थे।

संग्राम शाहः–

अकबरनामा से ऐसा प्रतीत होता है कि गोरखदास और अर्जुनसिंह, संग्रामसिंह के क्रमशः पितामह एवं पिता थे। संग्राम शाह गौंड़ वंश का सबसे प्रतापी शासक रहा, उसके विषय में ह्रिदयशाह द्वारा स्थापित शिलालेख में सगर्व उल्लेखित किया है कि ''संग्रामशाह ने तमाम पृथ्वी जीत डाली थी और उसने 52 गढ़ स्थापित किए थे।''

संग्राम शाह को उत्तराधिकार में तीन चार गढ़ ही प्राप्त किए थे, शेष उसने अपने बाहुबल द्वारा ही प्राप्त किए थे। अमानादास ने ''संग्रामशाह'' की जो पद्वी गुण धारण की थी उसका यह पूर्णरूप से पात्र था।

दुर्गावतीः– संग्राम सिंह के पुत्र दलपत शाह का विवाह महोबे के चंदेल राजा की रूपवती कन्या दुर्गावती से हुआ था, वह एक महत्वपूर्ण घटना थी। दलपत शाह का शासनकाल घटना विहिन रहा है। विवाह के मात्र 4 वर्ष के पश्चात् अर्थात् 1548 में दलपत शाह की मृत्यु हो गई अतएव वीर रानी दुर्गावती ने अपने नाबालिक पुत्र वीर नारायण की ओर से राज्य की बागडोर स्वयं सम्हाल ली। अपनी दूरदृष्टि अदभुत शौर्य, गोंड़वाना राज्य का राजनैतिक एकीकरण किया। रानी दुर्गावती ने 1548–1564 तक राज्य किया।[5]

मरहठेंः–

गोंड़ों के अंतिम राजा नरहरिसाहि की मृत्यु के पांच वर्ष बाद 1781 में गोंड़ों का राज्य पूरी तरह समाप्त होकर सागर के मराठों का पूरी तरह कब्जा हो गया उनके सेनापति मोराजी गढ़ा मण्डला के प्रथम शासक हुए।[6]

वर्तमान मण्डला जिला के सीमा रचना 1858 के बाद हुई सागर के मरहठों के अठारह वर्ष शासन काल में प्रजा कभी सुखी नहीं रही। कुशासन के कारण सागर वालों से नागपुर के भोंसलों ने राज्य अपने वश में कर लिया फिर भी प्रजा की उन्नति नहीं हुई। कुशासन वैसा ही रहा लेकिन इस बीच पिंडारियों का उत्पात अवश्य बढ़ा। सन् 1818 में भोंसले से और अंग्रेजों से कई संधियां हुई फलस्वरूप गढ़ा मण्डला का क्षेत्र अंग्रेजों के हिस्से में आ गया।

मण्डला जिले की उत्पत्तिः–

मण्डला शब्द की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों की अनेक धारणाएं है ''मण्डला'' शब्द ''मण्डल'' से निर्मित हुआ है। जिसका अर्थ होता है, वृत्त या सर्किल मण्डला में नर्मदा नदी मण्डल के सदृश संरचना बनाती है, पश्चिमी वाहिनी नर्मदा नर्मदा से दक्षिणी वाहिनी एवं उत्तर वाहिनी होकर अचानक बारीक मोड़ लेती है। सम्भवतः मण्डला के नामकरण का यही कारण रहा है।[7]

मण्डला नगर नर्मदा के दाहिने तट पर जबलपुर से 96 कि. मी. की दूरी पर स्थिति है। जनश्रुति के अनुसार यह नगर आज जहां पर स्थित है वहां प्राचीनकाल में माहिष्मती नगरी थी, यह ऐतिहासिक सत्य है अथवा नहीं इस विषय पर इतिहासकारों अथवा पुरातत्ववेताओं का एक मत नहीं है यह भी अभी स्पष्ट नही है कि यह नगर मण्डला के रूप में कब से विख्यात हुआ, परन्तु मण्डला नामकरण के प्रमुख आधार बताये जाते हैः–

1. मण्डन मिश्र नामक प्रकाण्ड विद्वान यहां के निवासी थे, उनके नाम पर ही इसका नामकरण 'मण्डला' किया गया।[8]
2. यह नगर त्रिपुरी के कल्चुरी नरेशों का एक प्रशासनिक 'मण्डल' था जिसे समय बीतने पर मण्डला कहां जाने लगा।[9]
3. यह जिला अपने छोटे से नगर के कारण मण्डला के नाम से जाना जाता है।
4. संस्कृत में मण्डल का अर्थ 'घेरा' होता है। मण्डला नगर को नर्मदा नदी तीन ओर से घेरे हुये है, मंडलाकार प्रवाहित होता है। मां नर्मदा के इस प्रकार के मंडलाकार घेराव के कारण इसका नाम

मण्डला रखा गया।[10]

मण्डला जिले की ऐतिहासिक महत्ता के मूल कारणों में यहां की शासन व्यवस्था गोंड़ों का इतिहास एवं मां नर्मदा का प्रवाह मान होना माना गया है, एवं पुराणों में नर्मदा को सरिता वंश नर्मदा का महत्व दिया गया है। एक अन्य विचार भी यह मिलता है कि आठवीं शताब्दी के कवि मुरारी के अर्न्धराघव नाटक के सप्तम–सर्ग में यह उल्लेख मिलता है, कि कल्चुरी राजाओं की प्राचीन राजधानी 'महिष्मती' चंड़ीमंडल के अन्तर्गत मुण्डमाला नगरी है, यह मुण्डमाला नगरी ही कालांतर में शब्द लोप (मा) या शब्द अपभ्रंश के द्वारा प्रसिद्ध मण्डला नगरी बनी।

''मण्डला'' शब्द की उत्पत्ति के विषय में कुछ लोगों का मानना यह भी है कि मंडला के महाराज साहि की मृत्यु (1741) के पश्चात् महाराष्ट्र के विद्वान ब्राम्हण आने लगे उनकी मण्डली बन गई एवं उनको मैथिल ब्राम्हणों की मण्डली से विद्या में सहयोग मिला जो मण्डला से ''मण्डला'' नाम पड़ गया।[11]

सन् 1964–1965 में मण्डला जिले में अमेरिका के एक प्रसिद्ध प्रोफेसर क्ण डबबवूद आये उन्होंने मण्डला जिले के आस–पास के क्षेत्र से पाषाणयुग और ताम्रयुग के औजार खोज निकाले जिससे यह बात सिद्ध होती है कि मण्डला जिले का अस्तित्व अति प्राचीन काल से ही रहा है।[12]

महिष्मतीः–

मण्डला जिले का प्राचीन नाम 'महिष्मती' नगरी थी। यह नगरी कार्तवीर्य सहस्त्रबाहु उर्फ सहस्त्रार्जुन की राजधानी थी[13] ऐसा माना जाता है कि सहस्त्रार्जुन पर लंकाधिपति रावण ने आक्रमण किया था, किन्तु इस आक्रमण में रावण पराजित हुआ था। रावण को सहस्त्रर्जुन ने अपनी हथशाला (हाथियों को बांधने का स्थान) में कैद कर रखा था तब रावण के पितामह पुलस्त ऋषि ने आकर सहस्त्रार्जुन से विनती करके रावण को छुड़ाया था सहस्त्रार्जुन के वंशज कलचुरी राजा माने जाते है।

महिष्मती नगरी की एक और प्रसिद्धता का कारण है शंकराचार्य और मण्डन मिश्र का शास्त्रार्थ जिसमें मण्डन मिश्र पूरी तरह पराजित हुए। उन्होंने सन्यासी जीवन धारण किया और शंकराचार्य के शिष्य बने जिनका सन्यासी नाम सुरेशवराचार्य हुआ इस शास्त्रार्थ के कारण महिष्मती नगरी विख्यात हुयी।[14]

इस नगरी के विषय में प्रयाग विश्वविद्यालय के डॉ. अमरनाथ ने 1923 में अपनी डायरी में लिखा में सहाहरया से बसआरी राजा के हाथी में बैठकर महिष्मती नगरी गया। वहां हमारे कुटुम्ब का प्राचीन निवास स्थान है, मकान का पुराना स्थान और सामने का पोखरा अभी भी हमारे कुटुम्ब के नाम से प्रसिद्ध है।[15] मण्डला जिले के गजेटियर में डा. फ्लीट के मत को मानकर मण्डला (मन्धाता) को ही महिष्मती माना गया है।[16] मण्डला शब्द मण्डल से बना है। मण्डला का अर्थ वृत्त या (बतबसम) अथवा गोला भी होता है। अतः मण्डल के अर्थ को महिष्मती नगरी के रूप में जाना जाता है। मण्डला जिले में सहस्त्रबाहु की दो मूर्तियाँ है जो यह बात सिद्ध करती है कि महिष्मती नगरी ही आधुनिक

मण्डला है। कनिंघम का भी मत है कि वर्तमान मण्डला ही प्राचीन महिष्मती है।[17]

महाभारत काल के पश्चात् मुगलकाल तक जनजाति के अनेक राजाओं ने मण्डला जिले पर राज्य किया है, उनके एवं कुछ अन्य प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि सन् 1200 के लगभग गढ़ा–मण्डला में गोंड़ राज्य की स्थापना हो चुकी थी वर्तमान उपलब्ध पृथ्वी राजरासों में भी इसका उल्लेख आया है।[18] गढ़ा मण्डला के गोंड़ राजाओं की वंशावली 1617 ई.[19] में रामनगर के मंदिर में राज हृदय शाह ने पाषाण पर अंकित करवा दी थी, जिसमें 53 राजाओं के नाम मिलते है, उस प्रशस्ति के लेखक राजकवि और पण्डित जय गोविंद हैं।[20] हीरालाल लिखते है कि संग्राम शाह का राजत्व काल 1480 ई. से 1530 तक ठहराया गया। संग्रामशाह वास्तव में ऐतिहासिक पुरूष थे। यह काल कलचुरियों के अन्त और गौंड़ों के उदय का समय था। गोंड़वंश का मूल पुरूष मदन सिंह कहलताा है। जिसने अपने नाम पर अनगढ़ चट्टानों पर महल बनवाया था। जो आज मदन महल कहलाता है।[21]

मण्डला नगर धार्मिक प्राकृतिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है, पौराणिक काल में यह महिष्मति नगरी के रूप में अति समृद्ध और महत्वपूर्ण था, इसके अलावा मंडला नामकरण को लेना भी अनेक तर्क प्रतिपादित किए गए है।

अस्माकं लक्ष्मीम्रव दीर्घ बाहो,
महिष्मतीं वप्र नितम्ब कांचीम्
प्रासाद जालैः जल रेवां आदि
प्रेक्षितुमस्ति कामः।।

वेणिम्यों, रघुवंश

पुण्य सलिला नर्मदा की गोदी में बसा मण्डला नगर पौराणिक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व पुरातात्विक दृष्ट से अति समृद्ध है। आज भी जीवित स्मारक इस क्षेत्र का गौरव गाथा का बखान करते हैं। पुरातत्व अवशेष अपने में प्राचीन कीर्ति को समाहित किये हुये है। पौराणिक युग में यह क्षेत्र अति पावन व गरिमामय और भव्य था। पौराणिक युग में यह महिष्मती नाम से विख्यात था। वर्तमान में भी यहां का कण–कण सभ्यता और संस्कृति का उद्घोष करता प्रतीत होता है। निःसंदेह यहां के परिवेश में एक आकर्षण चुंबकीय शक्ति है। जो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी और खींच सकने में समर्थ है। यहां कल्चुरी अवशेष है गोंड़ कालीन स्मारक एवं आदिवासियों की मूर्तियां है। उनके दैनिक उपयोग की वस्तुएं हैं। मंदिर गढ़ी, महल, किलें, मठ, पांडुलिया और जीवाश्म है, ऐसी अद्वितीय और असाधारण पुरातात्विक संपदा किसी भी क्षेत्र की गौरव गाथा का जीवंत इतिहास है।

1. रायबहादुर, हीरालाल – मण्डला मयूख – पृष्ठ 6
2. म. प्र. जिला गजेटियर मण्डला 1912 पृष्ठ 14
3. म. प्र. जिला गजेटियर मण्डला 1912 पृष्ठ 14
4. मण्डला मयूख – रायबहादुर हीरालाल, इन्टैक जबलपुर पृष्ठ 10

5. गढ़ा मण्डला के गौंड़ राजा, रामभरोसे अग्रवाल गौंड़ी ट्रस्ट मण्डला

6. सेलेक्शन्स फ्राम पेश्वा दफ्तर, तेरह पृष्ठ 13–14 क्रमांक 12 दिनांक 17.09.1728

7. गिरिजा शंकर अग्रवाल मण्डला के किले का इतिहास 1994 पृष्ठ 25

8. डी. एन. मजूमदार, आर. टी. एन. मदन एन इन्ट्रोडक्शेन टू सोशल, एन्थ्रोपोलॉजी 1956

9. टी. बी. नायम – अर्जेंट रिसर्च एण्ड सोशल एन्थ्रोपोलॉजी 1969

10. डी. एस. बघेल – भारतीय समाज पृष्ठ 36–37

11. गिरिजा शंकर अग्रवाल ‘‘मण्डला के किले का इतिहास 1994 पृष्ठ 25

12. गजेटियर – मण्डला जिला गजेटियर मण्डला, पृष्ठ 106

13. गजेटियर – इम्पीरियल गजेटियर आफ इंडिया पृ. 158

14. रामभरोसे अग्रवाल – गोंड़ों की सामाजिक स्थिति एवं इतिहास, पृष्ठ 377

15. अमरनाथ झा – मेमोरियल वाल्यूम प 1957 पृ. 144

16. रायबहादुर हीरालाल – इन्सक्रपसन इन द सी. पी. एण्ड बरार 1932 पृ. 75

17. रामभरोसे अग्रवाल – गोंड़ों की सामाजिक स्थिति एवं इतिहास पृष्ठ 382

18. पृथ्वीराज रासो

19. कनिंघम कृत – आक्योलॉजिकल रिर्पोट जिल्द 27, पृष्ठ 52

20. रायबहादुर हीराला – कृत मध्यप्रदेश की प्रशस्तियां, पृष्ठ 61

21. प्रयाग दत्त शुक्ल – आरण्य की संस्कृति, पृष्ठ 23–24

22. रायबहादुर हीरालाल – मण्डला मयूख, पृष्ठ 6